International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8 Issue 11, November 2018,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

नवगीतः अभिव्यक्ति के नवीन रूप

डॉ. सरिता
असिस्टेंट प्रोफेसर (हिन्दी)
श्यामलाल कॉलेज (सांध्य),
दिल्ली विश्वविद्यालय

आधुनिक हिन्दी कविता में नवगीत एक ऐसी विधा है, जिस पर आलोचकों की दृष्टि कम जाती है। स्वतंत्र विधा के रूप में विकसित नवगीत की संरचना में हमें काव्य के भाव और सौंदर्य की कलात्मक अभिव्यक्ति दिखाई देती है। नवगीत के कलेवर में सामाजिक संरचना में होने वाले परिवर्तनों की छवि भारतीय जीवन के सातत्य का प्रत्यक्षीकरण है। नवगीत के स्वरूप और उसमें संरचनात्मक परिवर्तनों की पड़ताल करने से पहले हमें नवगीत के ऐतिहासिक बदलावों, उसकी सामाजिक और सांस्कृतिक अपेक्षाएँ तथा समाज में चल रही अनेक घटनाओं को देखना आवश्यक है, जिनके बीच नवगीत ने अपने अस्तित्व को सुरक्षित रखा। स्पष्ट है कि नवगीत की विकास यात्रा उसमें आए संरचनात्मक परिवर्तनों की यात्रा ही है। सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला से लेकार बच्चन, धर्मवीर भारती आदि कवियों ने अपने गीतों में पारम्परिक रूप की अपेक्षा लीक से हटकर नए प्रतिमान स्थापित किए। इन प्रतिमानों से ही नवगीत के कलेवर की सृष्टि हो रही थी। नवगीत दशक–1 की भूमिका में डॉ. शम्भुनाथ सिंह लिखते हैं– 'जब काव्य शिष्ट समाज की अभिरूचियों, परम्पराओं एवं शास्त्रीय नियमों में बंधकर घिसा पिटा और बासी हो जाता है, तो प्रातिभ कवि लोक काव्य के अनेक तत्वों को अपनाकर कविता को लोकजीवन से जोड़ते हैं। गीत काव्य में यह बात सबसे अधिक दिखाई देती है। इस प्रक्रिया में गीत विधा का एक सीमा तक कायाकल्प हो जाता है। इस प्रकार के गीत पुराने पारम्परिक गीतों की तुलना में नवगीत होते हैं।'[1] यह सही है कि गीत विधा का स्वरूप हर युग में बदलता रहा है। मध्यकालीन युग में लोकधुन और लोक जीवन से संयोजित पद नए रूप के थे। भारतेन्दु युग के कवियों ने मध्यकालीन पद शैली को छोड़कर लोक गीतों की तर्ज पर होली, कजरी, विरह आदि की सृष्टि की। आगे चलकर श्रीधर पाठक ने देश प्रेम की भावना को ख्याल और लावनी के माध्यम से प्रकट किया। यद्यपि कुछ लोग नवगीत को नई कविता की तर्ज पर गढ़ा हुआ शब्द मानते हैं, परन्तु ऐसा नहीं है। गीत नवगीत प्राचीन भारतीय परम्परा में रची बसी एक ऐसी विधा है जिसकी संरचना में लोक मन बसा हुआ है। हालांकि नवगीत का आविर्भाव पचास के दशक में हुआ, इसी समय इसमें भावगत परिवर्तनशीलता दिखाई देती है। ओम प्रभाकर, ठाकुर प्रसाद सिंह और निराला के गीत प्रारम्भ में जहाँ परम्परा का अतिक्रमण करते हुए दिखाई देते हैं, वहीं ये भाषागत नवीनता भी लिए हुए हैं। राजेन्द्र प्रसाद सिंह द्वारा 1958 में संपादित 'गीतांगिनी' में नवगीत के नामकरण और उसकी प्रकृति की संभावनाओं का स्पष्टीकरण दिखाई देता है– 'नवगीत नयी अनुभूतियों की प्रक्रिया में संचारित मार्मिक समग्रता का आत्मीयतापूर्ण स्वीकार होगा, जिसमें अभिव्यक्ति के आधुनिक निकायों का उपयोग और नवीन प्रविधियों का संतुलन होगा।'[2]नवगीत में यह नवीनता प्रगतिशीलता ही आगे चलकर एक महत्वपूर्ण दाय बनी।

नवगीत के पूर्ववर्ती गीतों में अपने यथार्थ और लोक के प्रति रूमानियत का रंग अवश्य था, परन्तु बाद में यह रूमानी भाव निराला के आत्मटूटन और माखनलाल चतुर्वेदी के राष्ट्र भाव के रूप में दृष्टिगत होता है। आगे चलकर बच्चन, अज्ञेय, धर्मवीर भारती और नरेश मेहता के काव्य में लोकानुभूति का प्रश्रय दिखाई देता है। सन् 1960 के आसपास नवगीतकार ने समाज की आत्मकेन्द्रित भावनाओं को महसूस किया। स्वकेन्द्रित सोच की यह विद्रूपता राजनीति, समाज, मशीनीकरण आदि सबमें दिखाई देती है। आधुनिक बोध, बदलती सामाजिक स्थितियाँ, भौतिकता की अति, आत्मीय रिश्तों की टूटन और जीवन की लयात्मकता आदि नवगीत का कथ्य बने।

नवगीत आधुनिक युगबोध सम्पन्न एक ऐसी विधा है जो रागात्मकता के साथ–साथ बुद्धि, तर्क और यथार्थ को ग्रहण करने में पूरी तरह समर्थ है। शंभुनाथ सिंह के अनुसार – 'नवगीत आधुनिकतावादी कविता है, किन्तु वह आधुनिकता सार्वभौम और सार्वकालिक नहीं बल्कि देश काल सापेक्ष है। अतः उसकी आधुनिकता भारतीय परिप्रेक्ष्यवाली विशिष्ट आधुनिकता है अर्थात् वह पाश्चात्य आधुनिकता का अंधानुकरण नहीं है वह भारतीय परिस्थितियों के गर्भ से उत्पन्न यथार्थ और भोगी हुई अनुभूतियों की आधुनिकता है।'[3]नवगीतकारों में विद्यमान वर्तमान के प्रति सजगता इनकी

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8 Issue 11, November 2018,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

प्रगतिशीलता को लक्षित करती है। वैश्विक चिन्तन को आधार बनाकर लिखे गए गीत समाज में घटित प्रत्येक परिवर्तन, चिंतन ओर व्यवहार को अभिव्यक्त करते हैं।

वर्तमान युग तंत्र–सभ्यता का युग है। आज की भागदौड़ वाली जिंदगी में मानव एक मशीन की भांति बन कर रह गया है, जिसकी संवेदनाएँ मर चुकी हैं। आज व्यक्ति केवल खोखली मुस्कान, अकेलेपन, व्यस्तता एवं मौन के सहारे जी रहा है –

फिर न रेगिस्तान होते

देह में ऐसे

फिर न आते द्वार पर

मेहमान हो जैसे

हड्डियों को काटती क्यों ?

औपचारिकता

खोखली मुस्कान की

तह में नहीं रोते।[4]

औधोगीकरण के कारण नगरीकरण का दौर चला जिसमें ग्रामीणों ने शहरों की ओर पलायन करना प्रारम्भ कर दिया। कालान्तर में इस महानगरीय जीवन ने लोगों की स्वाभाविकता को नष्ट करके उनमें अकेलेपन, घुटन, कुण्ठा, अजनबीपन, संत्रास जैसी प्रवृति को पैदा कर दिया। नवगीत में इस महानगरीय जीवन की, उसके प्रभावों के साथ अभिव्यक्ति है। सोम ठाकुर के गीत 'तने हुए शहर के', देवेन्द्र शर्मा के 'टूट रही महराबे', शिवबहादुर सिंह भदौरिया के गीत 'महानगर में गाँव की याद' में शहरी जीवन की संस्कृति और उसके प्रभावों का वर्णन है। महानगर की घुटन भरी जिंदगी का वर्णन करते हुए कुंअर बेचैन लिखते हैं –

ऊपर लेबल अमृत का है

भीतर भरा जहर,

जिस बोतल में कैद हुआ हूँ

उसका नाम शहर।[5]

आधुनिक भावबोध भी नवगीत में अभिव्यक्त हुआ है। नवगीत ने रोमानी गीतों की भावभूमि से अलग एक जीवंत पारिवारिकता एवं सामाजिकता को वाणी दी है जो निराला के कुछ गीतों को छोड़कर पहले नहीं थी। यही उसकी नवीनता है और यही शक्ति भी। तथापि इस संबंध में अनेक शंकायें उठाई गई जो निर्मूल सिद्ध हुई। इस संबंध में दिनेश सिंह जी कहते हैं – 'गीतों की पहुँच के प्रति मेरे कुछ मित्र शंकित हो उठते हैं। वे सोचते हैं कि जटिल स्थितियों की अभिव्यक्ति में असमर्थ हो जाते हैं या कमजोर पड़ जाते हैं। उनके लिए मेरे गीत ही उत्तर हैं। नयी कविता का जो क्षेत्र है वही गीतों का भी, बल्कि यह कहें कि गीत कविता के कुछ वर्जित प्रदेशों में भी प्रवेश कर जाते हैं।[6] युगीन परिस्थितियों ने संबंधों के बीच जो ठण्डापन ला दिया है, उसने रिश्तों की पवित्रता को झुठला दिया है। चन्द्रदेव सिंह स्मृति के माध्यम से कभी–कभी उन भूले हुए रिश्तों को याद कर जोड़ने का प्रयास करते हैं –

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8 Issue 11, November 2018,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

अधरस्ते छूट गए जो प्यारे मित्र

प्याले में जब कभी तिरे उनके चित्र

दरवाजा उढ़का कर

हाते को पार कर

नाले में कागज की कुछ नावें छोड़ना

कुछ हिसाब जोड़ना।[7]

इस नागर संस्कृति में रागात्मक संबंधों का अभाव है। कितनी बड़ी विडम्बना है कि युग की विकरालता ने मधुर संबंधों का स्नेह–निर्झर सोख लिया है। चेतन पर अचेतन यंत्र विजय पा रहे हैं –

भीड़ भाड़ भाग दौड़, सूत्र खो गये

माँ बेटे पति–पत्नी यंत्र हो गए

कैसे दिन निकला कैसे गया गुजर

क्या जाने हमको इसकी कहाँ खबर।[8]

आधुनिकता के बदलते हुए आयामों ने लोक–संस्कृति को भी प्रभावित किया है। नवगीत के प्रारम्भिक दौर में आंचलिकता का तत्व उभर कर सामने आया जिससे लोक स्वभाव में मोहकता और मुग्धता पर दृष्टि गई। नवगीत की आंचलिकता अनुभव की प्रामाणिकता पर आधारित है।

वीरेन्द्र मिश्र के गीतों में आंचलिक लोक–संवेदना के अत्यंत सुखद दर्शन होते हैं। किसान की फसल जब अच्छी होती है तो वह अपने सारे दुख भूल जाता है और मानों प्रकृति भी व्यवहार में उसका पूरा साथ देती है–

बूढ़ा नीम बता सकता है कड़वी बात किसान की

लेकिन वह है मौन और आगे भी बोलेगा नहीं

क्योंकि आज धरती से आती ऐसी सौंधी गंध है

जिसके कारण कोई दृग में आँसू घोलेगा नहीं।[9]

प्रकृति का आंचलिक सौंदर्य व्यक्ति संवेदना को जागृत करता है। वह उस सौंदर्य में डूबता चला जाता है और प्रकृति चेतन रूप में उसके भीतर व्याप्त होती जाती है।

नईम के गीतों में मालवा की प्रकृति दृष्टिगत होती है। न केवल वहाँ की प्रकृति बल्कि उस प्रकृत्यांचल से बंधा इतिहास और काव्य भी वहाँ गूँजता जान पड़ता है –

दामन को मल–मल कर धोया

दाग नहीं छूटे

बड़ी पूण्य–भागा है शिप्रा

कालीदास के मेघदूत–सा

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8 Issue 11, November 2018,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

डूबा उतराया

ठहरा मण्डराया।[10]

यही नहीं आंचलिक परिवेश में भी इनके गीतों में पूंजीवादी शक्तियों के विरोध का स्वर है कि गरीबों की आड़ में कोई अपने स्वार्थों की पूर्ति न करे –

लो अब गाता हूँ

कोई मेरी कंगाली पर महल उठाए न

ये जो झोंपड़ी है, इससे प्यार मुझको

मैंने खींची लक्ष्मण रेखा, कोई पाँव बढ़ाए न।[11]

भारतीय परम्परा को अपने में समेटे नवगीत आज आधुनिक युग की बौद्धिकता से भी जुड़ गया है। इंटरनेट और कम्प्यूटर पर आधरित दुनिया, सूचना प्रौद्योगिकी, बाजार, उपभोक्ता–संस्कृति, पॉपुलर कल्चर आदि उत्तर सदी के आयाम भी नवगीत में स्पष्ट देखे जा सकते हैं –

अरे शाश्वत

तुम 'सुपर कम्प्यूटर' के आंकड़े हो

यों खड़े मत रहो

आओ पढ़ो

'टेलीपोथियों' को

और सीखो तुम लगाना

नये युग की गोटियों को।[12]

नवगीत आधुनिकता की उपलब्धियों से परिचित है परन्तु वह उस आधुनिकीकरण का प्रबल विरोध करता है जो भारतीय अस्मिता को मिटाकर यांत्रिक समाज में परिवर्तन करना चाहता है। बल्कि वह चाहता है कि आधुनिकता के इस शोर से जो घुटन का एहसास होता है वह सुखद क्षणों में परिवर्तित हो जाए, चुप्पियों का जहरीलापन नवगीत की लय में बदले –

शोर को हम गीत में बदले।

इन निरर्थक

शब्द समूहों का

खुरदरापन ही घटे कुछ तो

उमस से

दम घोंटते दिन ये

सुखद लम्हों में बंटे कुछ तो

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8 Issue 11, November 2018,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

चुप्पियों का

यह विषैलापन

लयों के नवगीत में बदले।[13]

इस प्रकार नवगीत एक परम्परा का पोषक है तो दूसरी ओर आधुनिक बोध के प्रति सजग और सतर्क भी है। नवगीत में व्याप्त सामाजिक चेतना की प्रवृति उसे समाज के प्रत्येक कर्म से जोड़ती है विशेषतः निर्धन, अभावग्रस्त मानव के प्रति सहानुभूति इसका आधार है। यह काव्य सांस्कृतिक चेतना के प्रति जागरूक है और अपने देश की मिट्टी से जुड़ा है। अतः प्राचीन सभ्यता, संस्कृति, कला और नैतिक मूल्यों के प्रति इसमें सम्मान की भावना मिलती है।

निष्कर्षतः नवगीत, गीत का विकसित रूप है, जो रूढ़ पद्धति तथा पारम्परिक भाव–बोध को छोड़कर नवीन पद्धति और विचारों के नवीन आयामों की अभिव्यक्ति है। सर्वप्रथम निराला ने हिन्दी गीत को एक नई दिशा दी और उसे यथार्थ के धरातल पर उतारकर लोक–संवेदनायुक्त बनाया। परिणामस्वरूप छायावादी व्यक्ति–केन्द्रिता का अतिक्रमण हुआ और गीत जीवन के साथ जुड़ गया। प्रयोगवाद और नई कविता के अनेक कवियों ने गीत–रचना में अपना योगदान दिया। कालान्तर में यद्यपि कुछेक नए कवियों ने गीत की प्रासंगिकता पर प्रश्नचिह्न लगाते हुए उसे जीवन के यथार्थ तथा बदलते हुए मानव मूल्यों की अभिव्यक्ति में अक्षम बताया। परन्तु, काव्य के आधुनिक स्तर पर लिखे गए गीतों ने इन आरोपों को निर्मूल सिद्ध कर दिया। आगे चलकर शंभुनाथ सिंह, वीरेन्द्र मिश्र, रामदरश मिश्र, शील, शैलेन्द्र, माहेश्वर तिवारी, देवेन्द्र शर्मा 'इन्द्र' और रमेश रंजक जैसे गीतकारों ने इसे समाज की तत्कालीन परिस्थितियों से जोड़ा। समय और समाज के साथ प्रतिबद्धता दिखाने वाले इन नवगीतकारों के काव्य में इनकी प्रगतिशील चेतना का ही प्रतिबिंब दृष्टिगत होता है, जिसके परिणामस्वरूप वर्तमान परिवेश में यथार्थ–बोध, समष्टि–उन्मुखता, प्रकृति–प्रेम और सौंदर्य के प्रति नवीन दृष्टि, समृद्ध सांस्कृतिक चेतना, जातीय अस्मिता के प्रति सजगता का भाव एवं अन्यायजन्य स्थितियों के प्रति आक्रोश व्यंग्य, करूणा, समाज विकास की संभावना आदि प्रगतिशील तत्व नवगीत की प्रगतिशीलता के नियामक बनें। नये मानव मूल्यों तथा समाज की विषमताओं का अंकन गीत रचना की इसी विकसित भावभूमि का परिचय देता है।

---

[1]शंभुनाथ सिंह, नवगीत दशक–1 भूमिका पृ.8
[2]राजेन्द्र प्रसाद सिंह, गीतांगिनी भूमिका, पृ.4
[3]शंभुनाथ सिंह, नवगीत दशक–2, भूमिका पृ.14
[4]रमेश रंजक, हरापन नहीं टूटेगा, पृ.66
[5]कुंअर बेचैन, भीतर सांकल बाहर सांकल, पृ.22
[6]दिनेश सिंह, नवगीत दशक–3 भूमिका, संपा. शंभुनाथ सिंह, पृ.113
[7]चन्द्रदेव सिंह, पाँच जोड़ बांसुरी, भूमिका, पृ.17–18
[8]उमाकांत मालवीय, सुबह रक्त पलाश की, पृ.35
[9]वीरेन्द्र मिश्र, लेखनी बेला, पृ.108
[10]नईम,नवगीत दशक–1, संपा. शंभुनाथ सिंह, पृ.24
[11]वीरेन्द्र मिश्र, लेखनी बेला, पृ.114
[12]कुमार रवीन्द्र, सुनो तथागत, पृ.37
[13]राजेन्द्र गौतम, गीत पर्व आया है, पृ. 66